University Grants Commission, New Delhi Recognized Journal No. 41311
ISSN: Print: 2347-5021 www.research-chronicler.com ISSN: Online: 2347-503X

बिरहोर आदिम जनजाति विलुप्ति के कगार में : सिमडेगा जिले के संदर्भ में

आईदा इला सीमा केरकेट्टा

वरिष्ठ प्राध्यापक, भूगोल विभाग, एम.डी.डी.एम. कॉलेज मुजफ्फरपुर

सारांश

बिरहोर छोटानागपुर के जंगलों और पहाड़ी ढलानों पर रहने वाली एक जनजाति है। ये सीमित साधनों एवं प्राकृतिक वातावरण की कठिनाइयों में सैकड़ों वर्षों से अभाव का जीवन व्यतीत करते आ रहे हैं आदिम अवस्था में रहने के कारण आज के आधुनिक युग में भी ये काफी पिछड़े हुए है। जिसके कारण इनके अस्तित्व पर संकट आ गया है। अतः समाज के मुख्यधारा से जोड़ने के लिए इनके अस्तित्व की रक्षा के लिए इन्हें इनकी समस्याओं से छुटकारा दिलाना अति आवश्यक है।

विशिष्ट शब्द – बिरहोर, जनजाति, आदिम जनजाति, जांघी, उथलू, कुम्बा, टांडा, सेंदरा, सिका, जोरी, सरई, ओखल, समट, खटिया

परिचय –

सिमडेगा जिला झारखण्ड के द. प. में स्थित है। इस जिले का क्षेत्रफल 3768.13 वर्ग कि. मी. है। भौगोलिक दृष्टिकोण से यहाँ पहाड़ियाँ एवं पठार मिलते हैं। इन्हीं पहाड़ियों एवं पठार पर जंगल मिलते हैं। जिले के लगभग 32 प्रतिशत क्षेत्र पर जंगल मिलते हैं। झारखण्ड में मिलनेवाली 8 आदिम जनजातियों में 1 बिरहोर है। बिरहोर आदिम जनजाति इन्हीं जंगलों में अपना जीवन बसर कर रहा है जिसके कारण ये समाज से अलग थलग पड़े हुए हैं।

उद्देश्य –

- बिरहोर क्षेत्र के विकास के लिए लोगों में जागरूकता फैलाना।
- प्रशासन, NGO, सरकार का इनके प्रति ध्यान आकर्षित करना।
- सरकारी योजनाओं, कार्यक्रमों के बारे में लोगों को जानकारी देना।
- क्षेत्र के लोगों के शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार लाना।
- गैर बिरहोर पाठकों को बिरहोर आदिम जनजाति की जानकारी देना।

अध्ययन क्षेत्र –

सिमडेगा जिला के विभिन्न प्रखण्डों के गाँवों में रहने वाले बिरहोर आदिम जनजाति का अध्ययन करना है। सिमडेगा जिला के अन्तर्गत आने वाले प्रखण्ड हैं– सिमडेगा, कुरडेग, बोलबा, बानो, ठेठईटांगर, कोलेबिरा, जलडेगा, पाकेड़टांड, बांसजोर और केरसई

अध्ययन का महत्त्व –

बिरहोर आदिमजनजाति के अस्तित्व को बनाए रखने और अपने ही क्षेत्रा में विकसित और संवर्धित होने के लिए इनके अध्ययन का महत्व काफी अधिक है।

विधि तंत्र –

अध्ययन में अवलोकन विधि, साक्षात्कार, प्रथम और द्वितीय आंकड़ों का प्रयोग किया गया है।

विवरण –

सिमडेगा जिला झारखण्ड के द. प. में स्थित है। झारखण्ड में सिमडेगा जिला में सबसे ज्यादा अनुसूचित जनजाति संख्या निवास करती है। जिले के कुल जनसंख्या का लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या अनुसूचित जनजातियों की है। अनुसूचित जनजातियों को दो श्रेणियों में रखा गया है। जनजाति और आदिम जनजाति। झारखण्ड में 21 जनजाति की श्रेणी में आती है और 9 आदिम जनजाति की श्रेणी में आती है। झारखण्ड में निवास करने वाली आदिम जनजाति हैं– बिरहोर, कोरवा, असुर बिरजिया, सौरिया पहाड़िया, माल पहाड़िया, सावर और परहइया हैं। आदिम जनजाति अल्पसंख्यक है। सिमडेगा जिला में बिरहोर और कोरबा दो आदिम जनजाति निवास करती है। बिरहोर दो शब्दों के योग से बना है बिर+होर। बिर का अर्थ जंगल और होर का अर्थ आदमी अर्थात जंगल में रहने वाला आदमी। सिमडेगा जिला के विभिन्न प्रखण्ड जहाँ बिरहोरों का निवास मिलता है वे हैं–

सिमडेगा, पाकेरटांड, कोलेबिरा, केरसई और ठेठईटांगर।

खाद्य, सार्वजनिक वितरण एवं उपभोक्ता मामले विभाग झारखण्ड सरकार द्वारा, अन्तयोदय अन्न योजना (AAY) के तहत राज्य के आदिम जनजातियों के बीच राशन कार्ड उपलब्ध कराया गया है। AAY के तहत सिमडेगा जिला में स्थायी तौर पर निवास करने वाले बिरहोर परिवारों की पहचान कर ली गई है। AAY राशनकार्डधारी बिरहोर परिवारों को 'झारखण्ड राज्य अजीविका संवर्धन संस्था JSLP खाद्य पदार्थो का वितरण करती है।

खाद्य सार्वजनिक वितरण एवं उपभोक्ता मामले विभाग झारखण्ड सरकार द्वारा जारी सिमडेगा जिला में बिरहोर आदिम जनजातियों की संख्या जून 2018 सिमडेगा जिला।

सिमडेगा जिला

क्रम सं.	प्रखण्ड	पंचायत/ग्राम	जनसंख्या
1.	सिमडेगा	कुलुकेरा	69
		सेवई	32
		बंगरु	15
2	पाकेरटांड	कैरबेडा	108
		घाघरा	06
3.	कोलेबिरा	सराईपानी जिल्पी	28
		राइसिया	12
		बोकबा	36
4.	केरसई	केरसई	97
		कुल	203

सिमडेगा जिला के उपर्युक्त चार प्रखण्डों के अलावा ठेठईटांगर प्रखण्ड के बांसपहाड़ तियन टोंगरी में जून 2018 को 4 बिरहोर परिवार निवास करते हैं इनकी संख्या 15 हैं।

बिरहोर पहाड़ियों में स्थित जंगलों में ही कुम्बा बनाकर रहते हैं। कुम्बा एक प्रकार की झोपड़ी है, जो जंगल में मिलनेवाले डालियों पत्तियों और लताओं से बना होता है। बिरहोर दो प्रकार के होते हैं उथलू और जांघी। उथलू घुमन्तु जीवन व्यतीत करते हैं और जांघी एक स्थान पर बस गए हैं। उथलु कुछ समय के लिए कुम्बा में रहते हैं कई कुम्बा मिलकर तान्दा (टोली) का निर्माण करते हैं। जीविका के साधन समाप्त होने पर अपने कुम्बा को उजाड़ कर और सीमित साधन को लेकर दूसरे स्थान को चले जाते हैं। लेकिन ऐसा करना, जो इनकी परम्परा रही है, अब आसान नहीं है क्योंकि सरकार अब इन्हें स्थायी तौर पर बसाने की कोशिश कर रही है।

आर्थिक क्रिया कलाप आज भी प्राथमिक स्तर पर है। आज भी जंगल में शिकार करने और जंगल से ही भोजन जुटाने के आदिम संस्कारों से लैस है। शिकार करने को सेंदरा कहा जाता है। शिकार समूह में किया जाता है। शिकार करने के लिए जाल, लाठी डंडा, कुल्हाड़ी का प्रयोग किया जाता है। बंदर और हनुमान का शिकार प्रमुखता से किया जाता है। इसके अलावा जंगल में मिलनेवाले छोटे–छोटे जानवरों का भी शिकार करते हैं। जंगलों से खाने के लिए मठा, सरला साग, हुरला साग, गेठी कांदा इत्यादि प्राप्त करते हैं।

आर्थिक उपार्जन करने के लिए प्लास्टिक बोरे से रस्सी निकालते हैं और उसे बांट कर मजबूत रस्सी बनाते हैं। रस्सी से सिका, हल बैल जोरी बनाते हैं। रस्सी बनाने का काम स्त्री पुरुष दोनों करते हैं। एक हल बैल जोरी 200 रू. 250 रू. तक में बिक्री होता है। रस्सी के अलावा जंगल से प्राप्त सरई लकड़ी (साल) से ओखल समट और खटिया बनाते हैं। अब ये अन्य कामों को भी करने लगे हैं। पाकेरटांड प्रखण्ड के नजदीक रामरेखा जलाशय है। जलाशय बनाने के क्रम में निकले चट्टानों को तोड़ने का काम करते हैं इसके अलावा लाह निकालने का काम भी करते हैं। कोलेबिरा प्रखण्ड के जिल्पी गांव के बिरहोर राजमिस्त्री का काम करते हैं।

इन जनजातियों में शिक्षा की काफी कमी है। अशिक्षित होने के कारण आधुनिक सभ्यता के विकास में कदम से कदम नहीं मिला सकते हैं। जून 2018 में सिमडेगा जिला में पाकेडटांड प्रखण्ड से एक महिला अमिता बिरहोर स्नातक और एक पुरूष सुकरा बिरहोर इंटर पास है। कोलेबिरा प्रखण्ड के जिल्पी गांव से निरल बिरहोर इंटर पास और हनोक बिरहोर 10^{th} पास है सिमडेगा प्रखण्ड के बंगरु से एक 10^{th} पास है। इसके अलावा इस जिला में और कोई भी मैट्रिक पास नहीं है।

बिरहोरों के पास अपनी जमीन नहीं है सिर्फ कोलेबिरा प्रखण्ड में भादो बिरहोर के नाम 2 एकड़ 14 डिसमिल जमीन है। भादो बिरहोर सिमडेगा जिले के सबसे बुजुर्ग व्यक्ति हैं इनकी उम्र 90 वर्ष से उपर बताई गई है जून 2018 को।

शिक्षा की कमी, रोजगार की कमी, कार्यकुशलता की कमी, जमीन की कमी के कारण इनमें गरीबी बहुत ज्यादा है। एक सामान्य जीवन यापन के लिए जिन चीजों की आवश्यकता होती है, उन सभी चीजों का इनमें अभाव है। गरीबी के कारण इन्हें संतुलित भोजन नहीं मिल पाता है। प्रायः सभी कुपोषण का शिकार हैं। विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रसित रहते हैं। बीमारियों का इलाज समय पर नहीं करा पाते हैं और उचित इलाज के अभाव में असमय मृत्यु हो जाती है इससे इनकी संख्या में भी कमी आ रही है।

गरीबी, बीमारी, कुपोषण बिरहोर की प्रमुख समस्या है।

सरकार की तरफ से इनके उत्थान के लिए कई योजनाएँ चलाई जा रही है। ठेठईटांगर प्रखण्ड के बांसपहाड़ तियनटोंगरी में रहने वाले उथलू बिरहोर हैं, जो गुमला जिला के रायडीह प्रखंड के लौकी गाँव और सिमडेगा जिला के कीलेबिरा प्रखण्ड के जिल्पी गांव से आ कर रह रहे हैं। घुमन्तु जीवन व्यतीत करने के कारण सरकारी आंकड़े में इनका नाम दर्ज नहीं है और इन्हें किसी भी प्रकार के सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिलता है।

बिरहोर आदिम जनजाति की समस्या के समाधान के लिए कुछ सुझाव दिए जा सकते हैं–

- बिरहोर को वन भूमि पट्टा देकर और उसमें सिंचाई की व्यवस्था कर किसान बनाया जा सकता है।
- भारत सरकार के वास्तुकला विभाग के माध्यम से बिरहोर का बना रस्सी को बाजार में पहुंचाया जाय।
- हर गांव में स्वास्थ्य उपकेन्द्र की स्थापना हो और हर 15 दिन में डॉ॰ का आना सुनिश्चित किया जाय।
- बिरहोर टोला में आंगनबाड़ी केन्द्र की स्थापना हो।
- इनके बीच गाय पालन, मुर्गी पालन, बकरी पालन, मछली पालन (सरकारी तालाब), मधुमक्खी पालन आदि योजना को लागू किया जाय।
- आय बढाने के लिए वन उत्पादन और लाह प्रशिक्षण दिया जाय।
- बालिकाओं की रक्षा पर विचार किया जाय।
- बच्चों के लिए आवासीय विद्यालय बनाया जाय और इसे अनिवार्य बना दिया जाय।
- मनरेगा पर इन्हें भी काम दिया जाय।

अनुसूचित जनजाति, कल्याण तथा समाज कल्याण द्वारा इनके लिए संचालित कुछ योजनाएँ–

- आदिम जनजाति विकास प्राधिकार के गठन हेतु प्रावधान इसके माध्यम से आदिम जनजाति के विकास के लिए सरकार ने बजट में अलग से प्रावधान किया है।
- बिरसा मुंडा आवास योजना।
- मुख्यमंत्री खाद्य सुरक्षा योजना, डाक योजना।
- पेयजल एवं स्वच्छता क्षेत्र–आदिम जनजाति टोलों में सौर ऊर्जा/बिजली चलित पाईप जलापूर्त्ति योजना।
- आदिम जनजातियों की सीधी नियुक्ति।
- वृद्धा पेंशन और विधवा पेंशन की व्यवस्था जिसमें लाल कार्ड बाधा नहीं होगी।

निष्कर्ष –

बिरहोर झारखण्ड की आदिम जनजातियों में से एक हैं। यह समाज की अतिपिछड़ी जनजातियों में से एक है। गरीबी, बीमारी, कुपोषण, अशिक्षा, बेरोजगारी, अकाल मृत्यु इनकी प्रमुख समस्याओं में से है। इन समस्याओं के कारण ये समाज से कटे हुए है। सरकार द्वारा इनके उत्थान के लिए कई योजनाएँ चलाई जा रही है। आशा करते हैं सरकार, प्रशासन, गैर सरकारी संगठन, स्थानीय नागरिकों की सहायता से इन योजनाओं का लाभ इन्हें शत–प्रतिशत मिले और जीवन स्तर में सुधार हो और क्षेत्र के विकास में इनकी भी भागीदारी हो।

संदर्भ सूची –

1. मुंडा राम दयाल प्रथम संस्करण 2002, आवृति 2014 आदिवासी अस्तित्व और झारखण्डी अस्मिता के सवाल 15 BN-81-7714-X
2. विद्यार्थी ललित प्रसाद, बिहार के आदिवासी 1988 पृष्ठ 141–161।
3. M.jagran.com>ranchi - 13975231
4. www.prabhatkhabar.com>ranchi>story
5. M.jagran.com>simdega-16157796
6. पाण्डेय गया 2007, भारतीय जनजातीय संस्कृति, कंसैप्ट पब्लिकेशन नई दिल्ली–110059
7. शर्मा बी. सी. झारखण्ड की जनजातियाँ, क्राउन पब्लिकेशन राँची।